छत्तीसगढ़ के लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ESAF SFB

- महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए कर रहा है सहायता

छत्तीसगढ़, **XX अक्टूबर**, **2019:** श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसरुपाली की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फंसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ESAF SFB की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की।

ESAF SFB से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरु की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंड हैंड ऑटो-रिक्शा खरीदा। व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया।

बकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी मगर व्यवस्थित प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ESAF SFB की

मदद से वह सिलाई मशीनें खरीद सकीं और एक सेल्स पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया।

कुन्तीबाई मानती हैं कि ESAF SFB के इन सभी ऋणों के साथ, उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर तक पहुंच गई, जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गई, जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

****

ESAF स्मॉल फाइनेंस बैंक को पहले ESAF माइक्रोफाइनेंस के रूप में जाना जाता था। यह एक भारतीय स्मॉल फाइनेंस बैंक है जो ऐसे क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएं और छोटे ऋण प्रदान करता है, जहां बैंकिंग सुविधाओं का अभाव है। बैंक बनने से पहले, ESAF एक NBFC-MFI था, जिसे आरबीआई द्वारा लाइसेंस दिया गया था। इसका मुख्यालय केरल के त्रिशूर शहर में है।

पिछले साल, GABV- ग्लोबल एलाइंस फॉर बैंकिंग ऑफ वैल्यूज़ का सदस्य बनने वाला ESAF भारत का पहला बैंक बना। GABV दुनिया भर में क्रेडिट यूनियन्स, कम्युनिटी बैंक्स और माइक्रोफाइनेंस बैंक्स सहित स्थायी बैंकों का एक नेटवर्क है, जो स्थायी बैंकिंग के माध्यम से 2020 तक एक अरब जिंदगियों को प्रभावित करने के लक्ष्य हेतु काम कर रहा है। अब तक, ESAF भारत के 15 राज्यों की लगभग 30 लाख महिलाओं को वित्तीय समावेशन के तहत ला चुका है।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है। शुरुआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योग/सेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों (जिनमें से 99% से अधिक महिलाएं हैं और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही) तक पहुंच कर लगभग 2,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को छुआ है। 2011 के मध्य में आंध्र प्रदेश (एपी) संकट के बाद जो उद्योग लगभग खत्म हो चुका था, उसके लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है।

NBFC-MFI देश का एकमात्र विनियमित वित्तीय संस्थान है, जो कम आय वाले परिवारों को असुरक्षित ऋण प्रदान करता है। ये संस्थाएँ उन महिलाओं के लिए कर्ज की अनुपलब्धता को खत्म करती हैं जिनके पास ऋण के बदले में गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं है। NBFC-MFI का उद्देश्य स्थायी आजीविका निर्माण करना है। दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राहकों को सभी प्रकार की वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हुए, ये संस्थान सरकार के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दे रहे हैं।

NBFC-MFI प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का एक महत्वपूर्ण भागीदार है और इस कार्यक्रम के तहत वितरित ऋण का लगभग 50% माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के माध्यम से किया गया है। एनबीएफसी-एमएफआई

भारतीय रिज़र्व बैंक के तहत पंजीकृत हैं और ऋण के आकार से लेकर ऋण की अवधि, ब्याज की दर तक बेहद सख्ती के साथ विनियमित होते हैं। साथ ही फेयर प्रैक्टिस कोड (एफपीसी) और इंडस्ट्री कोड ऑफ कंडक्ट (सीओसी) इनके कामकाज को नियंत्रित करते हैं। रिज़र्व बैंक सभी NBFC-MFI की नियमित निगरानी करता है।